3

मसीह में जीना

''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3)।

संसार के बहुत से देशों में विवाह के समय पुरुष तथा स्त्री द्वारा एक दूसरे को अंगूठी पहनाने की रस्म उनकी एक दूसरे के प्रति वचनबद्धता को दिखाती है। इस वचनबद्धता को दिखाने वाला चिह्न छोटा है (और आम तौर पर महंगा भी होता है), पर इसका अर्थ जीवनभर की प्रतिज्ञा है। विवाह का यह छोटा सा चिह्न हमें अहसास करवाता है कि छोटी-छोटी बातों में कई बार बहुत महत्वपूर्ण संदेश जाता हैं।

नये नियम का दो शब्दों का वाक्यांश ''मसीह में'' जो कभी-कभी अप्रत्यक्ष होता है, बहुत ही अर्थपूर्ण है। यह आत्मिक अर्थ के बिना तो होती ही नहीं है। इसे ''मसीह में'' (रोमियों 12:5), ''मसीह यीशु में'' (रोमियों 3:24), ''हमारे प्रभु मसीह यीशु में'' (रोमियों 8:39), ''उस में'' (2 कुरिन्थियों 5:21), ''प्रभु यीशु से [में]'' (रोमियों 14:14), ''प्रभु में'' (1 कुरिन्थियों 4:17), ''उसके पुत्र में'' (1 यूहन्ना 5:11), ''यीशु में'' (इफिसियों 4:21), ''उस में'' (इफिसियों 4:15), ''जिस में'' (इफिसियों 2:21), ''प्रभु यीशु मसीह में'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:12), ''यीशु में'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:14), या ''उसके पुत्र यीशु मसीह में'' (1 यूहन्ना 5:20) कहा जा सकता है; पर इसके धर्मशास्त्रीय अर्थों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इस अर्थ में मसीह से मेल का सुझाव दिया जाता है, जो कि मसीह की आत्मिक देह में बने रहना है। इसलिए इस वाक्यांश के अर्थों को अनदेखा करके हम कलीसिया में परमेश्वर की योजना के अर्थ और उसके महत्व को नहीं समझ सकते।

नये नियम में ''मसीह में'' और ''कलीसिया में'' दोनों वाक्यांशों का एक ही अर्थ मिलता है। यीशु की महिमा का वर्णन और यह पुष्टि करते हुए कि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर ''कलीसिया को'' दे दिया है, पौलुस ने कहा कि कलीसिया, ''उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है'' (इफिसियों 1:22,23)। पौलुस के अनुसार, कलीसिया मसीह की देह है; इसलिए, ''मसीह में'' होने का अर्थ मसीह की कलीसिया में होना है।

नये नियम में वाक्यांश ''मसीह में'' या इसके जैसे शब्दों को ढूंढ़ते हुए (विशेषकर पौलुस के लेखों में) हमें कलीसिया का हैरान करने वाला धर्मशास्त्रीय अर्थ और इससे *हमारे* सम्बन्धों का पता चलता है।[1] इस पर सावधानी से विचार करने पर हमें उसकी देह में मिलने वाली श्रेष्ठ आत्मिक आशिषें प्रभावित करती हैं। इस वाक्यांश का अर्थ समझे बिना मसीह की कलीसिया का सदस्य बनने के पवित्र शास्त्र के विचार की उम्मीद नहीं की जा सकती।

विशेषाधिकार का स्थान

पहले, ''मसीह में'' वाक्यांश उस विशेषाधिकार के बारे में बताता है जो प्रभु की कलीसिया के सदस्यों को मिलता है। ''मसीह में'' परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं।

इफिसियों 1:3-14 की विस्तृत स्तुति में, पौलुस ने ''मसीह में'' चुने हुओं को बनाने के लिए परमेश्वर की महिमा की:

> जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया (इफिसियों 1:4-6)।

पौलुस लोगों के पहले से चुने जाने अर्थात किसी का उद्धार होने और किसी के नाश होने के लिए पहले से चुने जाने की बात का उल्लेख नहीं कर रहा था। वह उन सब लोगों को बचाने की परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित व अद्‌भुत बात की ओर ध्यान दिला रहा था जिन्होंने मसीह के पास आकर विश्वास से उसकी बात माननी थी। जिसे संसार की नींव रखने से पहले ही, परमेश्वर ने चुन लिया था कि मसीह की देह में ही वह विशेषाधिकार होगा, जहां मसीह की देह में आने वालों को वह अपनी संतान के रूप में गोद लेगा।

परमेश्वर की इस पसन्द में मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा से कोई टकराव नहीं है। बल्कि, इससे मनुष्यों को चुने हुओं में से चुने जाने की स्वतन्त्रता दी जाती है। परमेश्वर ने पहले ही मसीह की देह का उद्धार करना चुन लिया है; परन्तु मनुष्य के लिए उस देह में आना और उसे रहने के लिए चुनना आवश्यक है।

नूह को बचाने के लिए परमेश्वर ने एक स्थान का चयन किया था (उत्पत्ति 7:1), परन्तु नूह और उसके परिवार के लिए इसमें प्रवेश करके रहना आवश्यक था (उत्पत्ति 7:7)। उस जहाज़ में नूह और उसके परिवार के लिए विशेषाधिकार मिला था। संसार के सब लोगों में से, केवल नूह और उसकी पत्नी, उसके पुत्र और उसकी बहुएं ही *जहाज़ में* थीं जिन्हें परमेश्वर ने चुना था अर्थात वे परमेश्वर के अनुग्रह तथा सम्भाल के द्वारा सुरक्षित थे।

किसी ने कहा है कि स्वर्ग में जाने पर *हमें* स्वर्ग के प्रवेश द्वार पर एक बहुत बड़ा बोर्ड दिखाई देगा। बोर्ड पर ये शब्द लिखे होंगे ''मेरे पास आओ।'' स्वर्ग में प्रवेश करने पर, हम

उन शब्दों को पढ़कर उद्धार के लिए प्रभु के निमन्त्रण और उसे स्वीकार करने की प्रत्येक व्यक्ति की स्वेच्छा के लिए परमेश्वर की इच्छा पर विचार करेंगे। स्वर्ग में प्रवेश करने के बाद, हम उस बोर्ड के पीछे पढ़ेंगे, जहां लिखा होगा: ''परमेश्वर के चुने हुए।'' फिर वह संसार की सृष्टि से पहले मसीह की देह के उद्धार की परमेश्वर की पसन्द और उस अतुलनीय विशेषाधिकार पर विचार करेगा जो परमेश्वर ने उस देह में प्रवेश करने वालों और उसमें रहने वालों के लिए रखा है।

कोई भी जो मसीह की देह, अर्थात कलीसिया में प्रवेश करता है, वह विशेषाधिकार के स्थान अर्थात परमेश्वर की पसन्द के स्थान में प्रवेश करता है। परमेश्वर की संतान बनना हमारे लिए अवसर की नहीं बल्कि पसन्द की बात है। परमेश्वर ने उद्धार का स्थान चुन लिया है, परन्तु उस स्थान में प्रवेश करना और उसमें बने रहना हमें चुनना पड़ेगा। जब हम मसीह की देह में प्रवेश करना चुनते हैं, तो परमेश्वर हमें अपनी संतान और अपनी प्रतिज्ञाओं के अनुसार वारिस बनाना चुन लेता है।

पूर्वप्रबन्ध का स्थान

''मसीह में'' आने वाले व्यक्ति की विशेषाधिकार के स्थान में होने के अलावा, परमेश्वर के भरपूर आत्मिक प्रबन्धों तक भी पहुंच होती है। पौलुस ने लिखा है कि मसीह की देह ''उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है'' (इफिसियों 1:23)। उसने आगे कहा है, ''क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे'' (कुलुस्सियों 1:19)। इस प्रकार उसने कहा, ''तुम उसी में भरपूर हो गए हो'' (कुलुस्सियों 2:10)।

प्रत्येक आत्मिक आशीष जो परमेश्वर हमारे लिए देता है ''मसीह में'' ही मिलती है। इफिसियों 1 में अपने स्तुतिगान का आरम्भ करते हुए पौलुस ने, एक ही वाक्य में वह सब कुछ कह दिया जो परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए किया है: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3)। पौलुस के ''सब प्रकार का'' वाक्यांश का अर्थ व्यापक है। परन्तु बिना मसीह में आए और उसकी बात माने परमेश्वर के उद्धार, व अत्यधिक आत्मिक प्रबन्धों को नहीं पाया जा सकता।

उन आशिषों पर विचार करें जो हमें ''मसीह में'' मिलती हैं। सबसे पहले, ''मसीह में'' *उद्धार* के सम्बन्ध में आशिषें मिलती हैं। ''उसमें'' हमें क्षमा मिलती है: ''हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है'' (इफिसियों 1:7)। ''मसीह में'' हम नई सृष्टि हैं: ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं'' (2 कुरिन्थियों 5:17)। ''यीशु मसीह में'' हमें अनन्त जीवन मिलता है: ''इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सहता हूं, कि वे भी उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएं'' (2 तीमुथियुस 2:10)।

दूसरा, ''मसीह में'' हमें *पुत्र होने* की आशिषें मिलती हैं। ''मसीह यीशु में'' हमारी पिता तक पूरी पहुंच होती है: ''पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो''; ''क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है'' (इफिसियों 2:13, 18)। ''उस में'' हमें अनन्त मीरास मिलती है: ''... उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने (इफिसियों 1:10, 11)।

तीसरा, ''मसीह में'' हमें *सुरक्षा* से जुड़ी आशिषें मिलती हैं। ''उसी में'' हम पर पवित्र आत्मा से मुहर होती है: ''और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी'' (इफिसियों 1:13)। ''मसीह में'' हम दण्ड से छूट जाते हैं: ''सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं'' (रोमियों 8:1)।

हमारे स्वर्गीय पिता ने सब आत्मिक आशिषें रखने के लिए मसीह की देह को ही चुना है। उसके उद्धार के उपहारों को केवल वही लोग पा सकते हैं जो उसकी देह में प्रवेश करते और बने रहते हैं।

पुराने नियम के इस उदाहरण पर विचार कीजिए। इस्राएली लोग मिसर को छोड़ने और प्रतिज्ञा के देश कनान में जाने की तैयारी कर रहे हैं। पहले फसह का समय है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने घरों के द्वारों की चौखट के सिरे और दोनों अलंगों पर फसह के मेमने का लहू लगाने और फसह की शाम अपने घरों में रहने का निर्देश दिया है (निर्गमन 12:22)। परमेश्वर के वहां से गुजरने पर इस निर्देश का पालन न करने वालों को अपने पहलौठे की मृत्यु सहनी पड़ेगी। वह आने वाली ऐतिहासिक शाम कितनी गम्भीर होगी! हर इस्राएली परिवार सारी रात सावधान रहेगा। शाम आरम्भ होने से थोड़ा पहले, हम किसी पहलौठे पुत्र द्वारा अपने पिता से यह पूछने की कल्पना कर सकते हैं, ''पिता जी, आपने दरवाज़े के सिरे और अलंगों पर लहू लगा दिया था ना?'' पिता उत्तर देता है, ''हां, बेटा। मैंने खुद लगाया था। लहू लगा हुआ है।'' थोड़ी देर बाद, पुत्र फिर पूछता है, ''पिता जी, आपको नहीं लगता कि हमें ठीक रीति से लेना चाहिए कि आपने लगाया भी था? शाम होने वाली है, और हमें अपने घर के अन्दर ही रहना है और फिर हम इसे जांच नहीं पाएंगे।'' पिता कहता है, ''अच्छा। मैं देखकर आता हूं कि सब कुछ ठीक ठाक हुआ है या नहीं।'' पिता जांचकर पुष्टि करता है कि उसने दरवाज़ों के सिरों और अलंगों पर परमेश्वर के निर्देशानुसार लहू लगा दिया है। पिता इस आश्वासन के साथ अपने पुत्र को सांत्वना देने के लिए लौटता है: ''सब कुछ ठीक ठाक है बेटा। हमने परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार कर दिया है। तुम परमेश्वर की इच्छा में सुरक्षित हो।''

वह पिता अपने पुत्र को यह आश्वासन दे सकता था क्योंकि वे परमेश्वर के निर्देशों के दायरे में रह रहे थे। उसी प्रकार, ''मसीह में'' हम परमेश्वर की इच्छा के दायरे में होते हैं। यदि हम उसके पुत्र में विश्वास से बने रहते हैं तो हमारा पिता हमारी सभी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

प्रतिज्ञा का एक स्थान

तीसरा, भविष्य के लिए हमारी एकमात्र आशा ''मसीह में'' है। इस जीवन के लिए सच्चे, अचूक अगुवे के रूप में मानवीय बुद्धि असफल हो जाती है, परन्तु मसीह में ''बुद्धि और ज्ञान से सारे भण्डार छिपे हुए हैं'' (कुलुस्सियों 2:3)। इस संसार का नाश होना तो तय है (2 पतरस 3:10)। इसलिए, इस संसार पर आधारित हर आशा अन्त में मिट जाएगी, परन्तु ''मसीह में'' हमें अनन्त जीवन, अर्थात खत्म न होने वाली मीरास मिलती है। (इफिसियों 1:11)।

मसीह में हमारी आशा के विषय में, यूहन्ना ने लिखा है, ''और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है'' (1 यूहन्ना 5:11)। हमें यह अनन्त जीवन दो प्रकार से अर्थात इस संसार में भरपूरी के जीवन और आने वाले संसार में अनन्त जीवन के रूप में मिलता है। मसीह में हमें इस जीवन में और आने वाले जीवन में आशा है अर्थात भरपूरी का जीवन अब और स्वर्ग में अनन्त जीवन। यीशु ने कहा था, ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)। यूहन्ना ने आगे कहा, ''जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है'' (1 यूहन्ना 5:12)। इससे भी आगे यूहन्ना ने लिखा है, ''मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है'' (1 यूहन्ना 5:13)।

पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार, अनजाने में किसी की हत्या करने वाला व्यक्ति ''लहू का बदला लेने वाले'' व्यक्ति से जो अपने रिश्तेदार की हत्या का बदला लेना चाहता हो, से बचने के लिए शरण नगर में भाग सकता था (यहोशू 20)। जब तक वह शरण नगर में रहता था तब तक वह सुरक्षित होता था। उस नगर में वह सामान्य जीवन व सामान्य भविष्य पा सकता था। यदि वह उस नगर को छोड़ जाए, तो लहू का बदला लेने वाला लगातार उसका पीछा करके उसे मार सकता था। उसका जीवन और भविष्य केवल उसी शरण नगर में सुरक्षित था।

उसी प्रकार हमारी आशा केवल ''मसीह में'' है। उसके बाहर हमारे लिए वह प्रबन्ध नहीं है जो हमें इस संसार में भरपूरी का जीवन या अनन्तकाल के लिए सुरक्षित आशा दिला सके। पौलुस कहता है कि अन्यजातियों के लोग जो मसीह से अलग किए हुए थे, संसार में आशा रहित थे (इफिसियों 2:12)। इसी प्रकार, मसीह से बाहर रहने वाला व्यक्ति संसार में आशा रहित है।

सारांश

''मसीह में'' वाक्यांश के महत्व के प्रकाश में, यह प्रश्न कि ''हम मसीह में कैसे आ सकते हैं ?'' न पूछकर हम मूर्खता ही करेंगे। हमारे प्रश्न का उत्तर दो पदों में दिया गया है। पहला, पौलुस ने रोमियों 6:3 में कहा है कि हमें नये नियम के बपतिस्मे द्वारा मसीह में लाया जाता है: ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो

उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ?'' दूसरा, पौलुस ने हमें गलतियों 3:27 में यही सच्चाई दी है: ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।''

मसीह में विश्वास करने, पाप के जीवन से मन फिराने और परमेश्वर की ओर मुड़ने, यीशु को मसीह मानने और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने पर हमें परमेश्वर के अनुग्रहकारी कार्य के द्वारा मसीह में लाया जाता है। हमारी *स्थिति* तुरन्त बदल जाती है, क्योंकि हमें विशेषाधिकार, प्रबन्ध और प्रतिज्ञा के स्थान में लाया गया है। हमारी *हालत* लगातार दिन प्रतिदिन परमेश्वर के वचन का भोजन करके, मसीह और परमेश्वर के परिवार के साथ संगति करके ज्योति में चलते व बढ़ते हुए बदलती ही जाती है।

मैंने एक साम्प्रदायिक कलीसिया के विषय में पढ़ा है जिसे अपनी भूमि में तेल का एक कुआं मिल गया था जिसमें से अपने आप तेल निकलता था और वह कलीसिया अचानक बहुत धनी हो गई। उन्होंने तुरन्त नए लोगों को सदस्यता देनी बन्द कर दी और हर माह मिलने वाले लाभांश को सदस्यों में बराबर बांटने का फैसला कर लिया। यह कलीसिया एक व्यापार बन गई और इसमें रहने वालों को बहुत सा आर्थिक लाभ होने लगा।

नये नियम की कलीसिया इस साम्प्रदायिक कलीसिया से और अन्य सभी साम्प्रदायिक कलीसियाओं से बहुत भिन्न है! यह स्वर्गीय धन से भरपूर मसीह की आत्मिक देह है। इसकी सदस्यता कभी बन्द नहीं की जा सकती। सुसमाचार को मानने वाला हर व्यक्ति इसमें प्रवेश करके परमेश्वर के दिए उपहारों में से ले सकता है। हर सदस्य की यीशु के द्वारा हर समय सभी आत्मिक आशिषें पाने के लिए आत्मा के द्वारा स्वतन्त्र रूप से पहुंच है। स्वर्ग का बैंक कभी किसी भी बन्द या ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें आत्मिक भण्डारों की कमी हो।

मसीह में आने वाले व्यक्ति को परमेश्वर की संतान होने के कारण, सभी आत्मिक आशिषें और अनन्त जीवन की आशा मिलती है, इसलिए निश्चय ही हमें इससे बड़ा प्रश्न नहीं पूछा जा सकता कि ''क्या आप मसीह में हैं ?''

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. नये नियम में ''मसीह में'' वाक्यांश को किस किस प्रकार इस्तेमाल किया गया है।
2. ''मसीह में'' और ''कलीसिया में'' वाक्यांशों की तुलना करें।
3. इफिसियों 1:4-6 में उस पहले से ठहराए होने [प्रीडेस्टिनेशन] की व्याख्या करें जिसके विषय में पौलुस ने लिखा है।
4. नूह और उसके परिवार और जल प्रलय के साथ पहले से ठहराए होने की धारणा का सम्बन्ध बताएं।
5. ''मसीह में'' मिलने वाली कुछ प्रमुख आशिषें बताएं और उनमें से प्रत्येक का संक्षेप में वर्णन करें।
6. ''भरपूरी का जीवन'' और ''अनन्त जीवन'' में सम्बन्ध बताएं।
7. शरण नगरों और पुराने नियम के युग के उनके कार्यों का वर्णन करें।
8. ''मसीह में'' होने के सम्बन्ध में इफिसियों 2:12 की व्याख्या करें।
9. रोमियों 6:3 मसीह में प्रवेश के विषय में क्या कहता है ?
10. गलतियों 3:27 मसीह में प्रवेश के बारे में क्या कहता है ?
11. मसीह में हमारी *स्थिति* के साथ मसीह में हमारी *हालत* से तुलना करें।
12. हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि हम ''मसीह में'' हैं ?